मुक्तकाञ्जलि

भाग – 2

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

लेखकः

प. पू. गणाचार्य श्री 108 आचार्य

श्री विराग सागर जी महाराज

प.पू. वात्सल्य दिवाकर
आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज

प.पू. तपस्वी सम्राट
आचार्य श्री 108 सन्मतिसागरजी महाराज

प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज

मुक्तकाञ्जलि

भाग-2

(कृतिकार)

प. पू. मुनि श्री 108 विराग सागर जी महाराज

: प्रकाशक :

सम्यग्ज्ञान प्रकाशन विभाग

श्री सम्यग्ज्ञान दिग. जैन विराग विद्यापीठ,

बताशा बाजार, भिंड (म.प्र.)

☛ प्रसंग : प.पू. न्याय भास्कर राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विराग सागर जी महाराज की स्वर्णिम जन्म जयंती, युग प्रतिक्रमण एवं यति सम्मेलन के सुअवसर पर

☛ कृति : मुक्तकाञ्जलि भाग-1

☛ लेखक : प.पू. मुनि श्री विराग सागर जी महाराज

☛ संस्करण : I, 1000 प्रतियाँ, टीकमगढ़, 1990
II, 1000 प्रतियाँ, जयपुर (राज.) 2012

☛ पुण्यार्जक : स्व. श्रीमती गुलाबदेवी श्रीमती शकुन्तलादेवी-महावीरकुमार जैन, श्रीमती सुनिता-संजयकुमार जैन, समीर एवं साराक्षी जैन (नीमाजवालें)

☛ मूल्य : 10.00 रु.

☛ प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल :

1. **श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)

2. **आचार्य श्री विराग सागर विद्यापीठ**
(बी.एड.कॉलेज)
पुष्प विहार कॉलोनी, बीना-470113
जिला-सागर (म.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : प्रदीप शाह मो. 9425135816

3. **विराग फाउण्डेशन**
C/o श्री अरुण कोटड़िया
II-A, विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुरा
अहमदाबाद - 380018 (गुज.)
सम्पर्क सूत्र : अरुण कोटड़िया मो. 09825900124

4. **श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह**
12-B, वर्धमान सोसायटी, डेरी रोड, मेहसाना-2 (गुज.)
सम्पर्क सूत्र : श्री भूपेन्द्र शाह मो. 09898494914, 9429452020

* मुद्रक : तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
फोन : 9314962475

जीवन बिन्दु

(परम पूज्य गणाचार्य
श्री 108 विराग सागर जी महाराज)

पूर्व नाम	:	अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म	:	2 मई, 1963, शुक्रवार (वैशाख सुदी वि.सं. 2020)
माता-पिता	:	श्रीमती श्यामादेवी जैन (समाधिस्थ आ. विशांत श्री माताजी) श्रीमान् ब्र. कपूरचन्दजी जैन (संघस्थ प.पू. गणाचार्य 108 विराग सागर जी महाराज)
बहिन	:	श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई	:	श्री विजय कुमार, श्री सुरेन्द्र कुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैयाजी
लौकिक शिक्षा	:	इण्टर, मध्यमा [(पथरिया, श्री शान्ति निकेतन, दि. जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी (म.प्र.)]
क्षुल्लक दीक्षा	:	20 फरवरी, 1980 (फाल्गुन शु. 5 वि.सं. 2036 बुढ़ार, शहडोल)
नामकरण	:	पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्ण सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षा गुरु	:	परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागरजी महाराज
मुनि दीक्षा	:	9 दिसम्बर, 1983 [(मगसर शु. 5 वि.सं. 2040 औरंगाबाद (महा.)]
नामकरण	:	प.पू. मुनिश्री विराग सागर जी महाराज
मुनि दीक्षा गुरु	:	प.पू. निमित्तज्ञानी, वात्सल्य रत्नाकर, आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज
आचार्य पद	:	8 नवम्बर, 1992 (कार्तिक शु. 13 वि.सं. 2049 रविवार, द्रोणगिरि)
संयम सृजन	:	आचार्य-8, मुनि 54, आर्यिका-47, ऐलक-5, क्षुल्लक 27, क्षुल्लिका-20, तथा ब्रह्मचारी भाई-बहिनें-50 कुल 161
प्रशिष्य लगभग	:	45

साहित्य सृजन	:	I वारसाणुपेक्खा ग्रंथ पर – 1100 पृष्ठीय सर्वोदयी संस्कृत टीका II रयणसार ग्रंथ पर 800 पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी संस्कृत टीका III अनेक-शोधात्मक चिन्तनीय, बालकोपयोगी, कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य जीवनी एवं प्रवचन साहित्य – 150 से अधिक पुस्तकें
समाधिसल्लेखनाएँ	:	35
चातुर्मास	:	1980 से 2011 तक क्रमशः दुर्ग (छत्तीसगढ़), कारंजा (लाड) (महा.), कारंजा (लाड) (महा.), नागपुर (महा.), भावनगर (गुजरात), पांचवा (राज.), निमाज (राज.), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र), द्रोणगिरि (म.प्र), श्रेयांसगिरि (म.प्र), बीना (म.प्र.), ललितपुर (म.प्र.), मढ़ियाजी (जबलपुर), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), शिखरजी (झारखण्ड), गया (बिहार), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), भिलाई (छत्तीसगढ़), कारंजा (लाड) (महा.), मूडबिद्री (कर्ना.), मेलचित्तामूर (तमिलनाडू), उदगाँव (महा.), मुम्बई (महा.), गाँधी नगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.)
जाप्य	:	लगभग 1 करोड़ 60 लाख
व्रत	:	कर्मदहन, भक्तामर, णमोकार मंत्र, चारित्रशुद्धि, चौसठऋद्धि, दर्शनविशुद्धि, षट्रसीव्रत, नीतिसार, वचन गुप्ति, अष्टमी-चतुदर्शी-नीरस, समवशरणव्रत आदि व्रत उपवास व नीरस किये।
तप त्याग	:	दही-तेल दो रस आजीवन त्याग, बेर, करोंदा, टिंडा, जामुन, सभी हरी पत्ती, मटर छोड़ सभी फल्ली, पपीता, कटहल, कद्दू ब्रेड, तरबूज, नेलकटर-सन् 1985 से, थूंकने का त्याग सन् 1983 से।
विशेष त्याग	:	कूलर, पंखा, लेपटॉप, मोबाईल, हीटर
पंचकल्याणक	:	लघु वृद्ध मिलाकर 50 पंचकल्याणक

श्रद्धा सुमन

सूर्य उदय हो जाने पर विज्ञ जनों के लिये कहना नहीं पड़ता कि सूर्य का उदय हो गया है, अपितु उसके प्रकाश व प्रताप से ही सूर्य का अस्तित्व स्वयं सिद्ध हो जाता हैं। उसी प्रकार परम पूज्य, प्रज्ञा श्रमण, आचार्यश्री 108 विराग सागर जी महाराज के बारे में जानकारी देना आवश्यक नहीं। उनका परिचय तो उनके कर–कमलों द्वारा रचित ग्रन्थों से, निर्दोष चर्या से, अल्पवय में ही इतनी कठिन साधना एवं ज्ञानाध्ययन आदि अनन्त गुणों से स्वतः ही हो जाता है।

परम पूज्य आचार्यश्री की लेखनी से अब तक लगभग 20 ग्रन्थों की रचना हो चुकी है। जिनमें कुछ ग्रन्थ गद्य व सुबोधक पौराणिक कथायें, सन्मार्ग को उन्मुख करने वाले एवं वस्तु तत्व का सत्य रूप प्रतिपादित करने वाले संवाद, नाटक, चित्त की आकुलता व्याकुलता दूर कर शांति प्रदान करने वाली "चैतन्य चिंतन" नाम की पुस्तकें भी हैं। इसके साथ–साथ ही आबाल वृद्धों के लिए जैनागम के तत्वों को जानने के लिए बाल विज्ञान की पुस्तकों के भी पाँच भाग प्रकाशित हो चुके हैं।

धर्म की चर्चा हम बहुत कर लेते हैं,
धर्म के नाम पर अपनी बात कह लेते हैं।
धर्म को धूमिल करने वाले तुम सोचो जरा,
अपने आपका हम स्वयं ही पतन कर लेते हैं।।

आज की सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात करते हुये समाज को सचेत किया है,

दहेज के धन से कब तक जी सकोगे,
दहेज के धन से कब तक सुखी रहोगे।

जीवन साथी के गुण देख लो तुम,

दहेज से कब तक शान्ति रस पी सकोगे।।

सामाजिक व्यवस्था, पाठशालाओं की आवश्यकता, धर्म का विघटन/पतन समस्त ज्वलंत समस्याओं का निराकरण हमें आचार्यश्री ने दिया है, जरूरत है उस पर अमल करने की। हम उनके उपदेशों को किचिंत् भी अपने जीवन में उतार सके तो हमारा चातुर्मास, पावन अवसर सार्थक होगा....।

इसी कामना सहित.......

मुनिराजों के चरणों में शत शत नमन्

वीर निर्वाणोत्सव 2518
श्रेयांसगिरि चातुर्मास

गुरुचरण चंचरीक
प्रबल कुमार जैन
गुनौर (पन्ना) म. प्र.

धर्म

धर्म को हम अनादि से सुनते आये हैं,
धर्म को हम अनादि से सुनाते आये हैं।
रिक्त रहे किन्तु हम धर्म से बंधुओं, क्योंकि
सुनने और सुनाने को धर्म समझते आये हैं।।

कुछ लोग धर्म के लिये धन देते हैं,
कुछ लोग धन के लिये धर्म देते हैं।
जरा से अन्तर का परिणाम बहुत गहरा है,
आज तो लोग नाम के लिये धन और धर्म दोनों देते हैं।।

स्वार्थ की भावना ने ही जग को लूटा है,
स्वार्थ की भावना ने ही सत्य को पीटा है।
स्वार्थ की भावना पर लाज आती है मुझे,
स्वार्थ ने ही धर्म को कर दिया किया है।।

धर्म अब आपस में बट चुका है,
इसलिए वह वास्तविकता से हट चुका है।
आज तो कोरी सम्प्रदायें और, परंपरायें ही रह गयी,
इसीलिए ही प्राणी आज धर्म से भटक चुका है।।

धर्मात्माओं में भले ही परंपराओं का भेद हो,
धर्मात्माओं में भले ही सम्प्रदाओं का भेद हो।
किन्तु मन भेद न हों, आपसी विद्वेष किसी में,
धर्मात्माओं में भले ही क्यों न संघ भेद हो।।

धर्म की चर्चा हम बहुत कर लेते हैं,
धर्म के नाम पर अपनी बात कह लेते हैं।
धर्म को धूमिल करने वाले तुम सोचो जरा,
इसलिए हम स्वयं ही अपना पतन कर लेते हैं।।

शर्म आती है उनकी कोरी वार्ता पर जो कहते धर्म है,
धर्म के नाम पर ही निश दिन जो कमाते कर्म हैं।
कथनी और करनी में बड़ा अतंर है बन्धुओं,
चल पड़े जो धर्म पथ पर, समझा उन्होंने ही धर्म है।

धर्म के गीत गाते और सुनाते सभी हैं,
सत्यार्थ पथ दूसरों को दर्शाने आगे आते सभी हैं।
धर्म से सुख होगा यह अभी तक समझा नहीं,
इसलिये ही दूसरों को मात्रा पथ दिखाते सभी हैं।।

धर्म के अवसरों को पा सौभाग्य समझो,
पाकर के उसे जीवन में उतारना समझो
चूक न जाना सुअवसर भूल से कभी,
चूक गये उसे तो अपना दुर्भाग्य ही समझो।।

धर्म कुल में जन्म पाना सौभाग्य है,
परिवार सारा धर्मात्मा होना महाभाग्य है।
किन्तु यह ध्यान रखो मेरे बन्धुओं,
स्वयं भी धर्म पथ पर चलना परम भाग्य है।।

संकटों को आज तुम निज हृदय लगा लो,
कठनाइयों को आज तुम गले लगा लो।
स्वागत कर लो आज तुम अनादर का भी,
इससे भी अपनी साधना को तुम तपा लो।।

संकटों में ही धर्म की परीक्षा होती है,
कठनाइयों में धर्म की साधना होती है।
सहन कर लो अनादर को भी समता से तुम,
धर्मात्मा की पहिचान सत्य समता से होती है।।

संकटों का तुम प्रसन्नता से सामना कर लो,
सकटों में तुम समता की कामना कर लो।
अविचलित हो प्रथम, सफलता मिलेगी तुम्हें,
प्रतिकूलता में समता की साधना कर लो।।

धर्म प्राणियों का अब नष्ट होने लगा है,
धर्म साधना में उन्हें कष्ट होने लगा है।
पता नहीं हमारा भविष्य क्या होगा उनका,
क्योंकि स्वार्थपथ इष्ट होने लगा है।।

धर्म का उपदेश सुन हम थक चुके हैं,
धर्म का उपदेश दे हम थक चुके हैं।
सुनने और सुनाने को हम धर्म समझते है,
इसलिये ही टेपरिकॉर्ड हम बन चुके हैं।।

जब तक तुम्हें पतन से भय नहीं है,
जब तक तुम्हें भव भ्रमण से भय नहीं है।
धर्म नहीं होगा तब तक, ध्यान रखो,
जब तक तुम्हें पाप से भय नहीं है।।

कोरी धर्म चर्चा करना छोड़ दो अब,
बहानें बनाने की आदत छोड़ दो अब।
समय बहुत निकल गया है अब सम्हल जाओ,
धर्म पथ पर चलना अब सीख लो तुम।।

धर्म को आज हमने ही छाँट लिया है,
सामान्य को विशेष से काट दिया है।
टुकड़े–टुकड़े कर दिये हमने ही धर्म के,
धर्म को अनेक भागों में हमने ही बाँट दिया है।।

धर्म हँसी को आज तुम जी भर के सुन लेते ही,
उसमें ही शामिल हो अति प्रसन्न हो लेते हो।
अरे! धर्म को बदनाम करने वालों अपना भविष्य तो देखो,
उपगूहन अंग को क्यों नहीं तुम गुन लेते हो।।

पर को कष्ट देना ही है कष्ट को मोल लेना,
धर्म की तराजू में भी स्वयं को तौल लेना।
किसी का दुख दूर न कर सको तो इतना करना,
किसी के घाव में तुम नमक मत घोल देना।।

मन भर पापों को जब तक कण भर समझा,
मन भर पापों को जब तक मन भर समझा।
होगा नहीं तब तक धर्म प्यारे बन्धुओं,
कण भर पापों को जब तक न मन भर समझा।।

बीज बोने के पूर्व खेत साफ कीजिये,
धर्म धारण के पूर्व पाप त्याग कीजिये।
फल मिलेगा तभी प्यारे बन्धुओं,
इस बात को आप ध्यान से मान लीजिये।।

धर्म उपदेशों में भी स्वार्थ छिपा बैठा है,
पैसा या प्रतिष्ठा का अर्थ छिपा बैठा है।
सत्य को हम खो देते हैं अवसरों पर,
लोभ–लालच का भी भूत छिपा बैठा है।।

धर्म कर रहे किन्तु समय पास नहीं है,
धर्म कर रहे किन्तु सत्य उत्साह नहीं है।
क्या धर्म के फल को तुम कभी पा सकोगे,
धर्म कर रहे किन्तु हार्दिक भाव नहीं है।।

कोरी अध्यात्म चर्चाओं से आगम पिट चुका है,
कोरी अध्यात्म चर्चाओं से आगम मिट चुका है।
थोथे अध्यात्म वादियों ने बदनाम कर दिया आगम,
कोरी अध्यात्म चर्चाओं से आगम लुट चुका है।।

अध्यात्म की आड़ में आगम मत मोड़ो,
अध्यात्म की आड़ में अपनी बात मत जोड़ो।

अध्यात्म के सेवक तुम सत्य को खोजो,
अध्यात्म की आड़ में सिद्धान्त मत तोड़ो।।

अध्यात्म को आप पहले स्वयं समझ लो,
समझ में न आये तो विज्ञ मुनियों से समझ लो।
बिना समझे लोगों को समझाना उपल नाव है,
डुबा देगी स्वपर को तुम निश्चित समझ लो।।

अध्यात्म सूत्रों को जिसने मुनियों से सीखा,
निश्चित ही वह कभी न हो सकेगा फीका।
पार होगा स्वयं वा कर देगा भव पार तुमको,
उससे यदि तुमने जो अध्यात्म को सीखा।।

अध्यात्म और आगम के अभेद को समझो,
कौन भेद को कहता है कौन समझो।
व्यवहार निश्चय में ये घटते हैं क्रमशः,
रहस्य पूर्ण सूत्रा इसे तुम पहलें समझो।।

पापों से भीरू प्रथम हो जाओ तुम,
भव से भी भीरू फिर हो जाओ तुम।
निश्चित ही अध्यात्म की ओर कदम बढ़ा लेना,
सम्यक् ज्ञान पा निर्ग्रंथ प्रथम हो जाओ तुम।।

अध्यात्म को तुम भेद से मत जोड़ना,
अध्यात्म को तुम अभेद से ही जोड़ना।
सावधान रहना तुम अन्याय से,
अध्यात्म को तुम विकल्पों से मत जोड़ना।।

अध्यात्म पथ पर न चल सके तो मत मोड़ना उसे,
अध्यात्म रहस्य न समझ सके तो मत मोड़ना उसे।
सत्य को समझ कर तुम सत्य ही कहना हमेशा,
यदि समझ में कुछ कमी हो तो मत बोलना उसे।।

सत्य को सम्प्रदाय से मत जोड़ो,
सत्य को परंपराओं से मत जोड़ो।
सत्य को संकीर्णताओं से मत बाँधो बन्धुओं,
सत्य को अपनी मान्यता से मत जोड़ो।।

भले ही सत्य को हम संप्रदाओं में बाँट लें,
भले ही सत्य को हम परम्पराओं में बाँट लें।
कल्पित कल्पना में ही संभव है ये तुम्हारी,
शक्ति नहीं है किसी में कि सत्य को बाँट ले।।

जोड़ दो सम्प्रदाओं को अब सत्य से,
जोड़ दो परम्पराओं को अब सत्य से।
संप्रदाय और परम्पराओं के विशेषण तोड़ दो,
जोड़ दो अपनी मान्यता को अब सत्य से।।

जिस दिन विचारधारा सत्य से मिल जायेगी,
उस दिन ही सांप्रदायिकता मूल से मिट जायेगी।
परम्पराओं के मतभेद सब नष्ट हो जायेंगे,
सत्य के प्रकाश में हम आपस में मिल जायेंगे।।

भक्ति

श्रद्धा से ही भक्ति सदा सच्ची होती है।
बिना विवेक की भक्ति सदा कच्ची होती है।।
भक्ति भी मोक्ष का एक द्वार है।
विनय युक्त भक्ति ही अच्छी होती है।।

परिचितों की भक्ति कुछ और होती है।
अपरिचतों की भक्ति कुछ और होती है।।
भक्ति–भक्ति में अन्तर होता है बहुत।
अतिपरिचितों की भक्ति भी कुछ और होती है।।

भक्ति ने जब अपनी सीमा तोड़ दी।
भक्ति ने जब अपनी गति मोड़ ली।।
भक्ति ने अपनी अब प्रगति छोड़ दी।
भक्ति ने अब भगती की चादर ओढ़ ली।।

बिना पैरों के हम दौड़ना चाहते हैं।
बिना नेत्राों के हम देखना चाहते हैं।।
सफल होगा क्या लक्ष्य हमारा प्यारे बंधुओं।
बिना भक्ति के हम भगवान बनना चाहते हैं।।

भगवान बनने वाले आज भक्तिहीन हो गये,
भगवान बनने वाले आज शक्तिहीन हो गये।।
पता नहीं क्या हुआ क्यों भूल गये वे,
भगवान बनने वाले भव विलीन हो गये।।

भगवान बनना चाहते तो विधि पूछ लो उनसे,
भगवान बनना चाहते तो कुछ सीख लो उनसे।
रास्ते पर पहले भक्ति नगर मिलता है,
वहाँ तक जाने का प्रथम मार्ग पूछ लो उनसे।।

उपासना के एक सत्य अर्थ को देखो,
उपासना के साध्य रुप अर्थ को देखो।
साध्य रुप गुण यदि लक्ष्य में आ गया,
उपासना के फल को फिर जी भर के देखो।।

भक्ति नहीं देखती कभी छोटे बड़े को,
भक्ति की शत परीक्षा का समय है बन्धुओं,
भक्ति नहीं देखती कभी सड़े गले को।।
भक्ति नहीं देखती कभी बैठे खड़े को।

पुण्य

पुण्य फलों को हम दिन रात जोड़ते,
उसकी ही वृद्धि हेतु दिन रात दौड़ते।
अरे! पुण्य को हेय कहने वालों तुम कहो,
पुण्य फलों के राग को तुम क्यों नहीं छोड़ते।।

पुण्य कभी हेय नहीं होता है,
पुण्य का फल भी कभी हेय नहीं होता है।
ये जड़ वैभव ही पुण्य का फल है,
फल में अटक जाना ही हेय होता है।।

पुण्य फल का राग ही प्राणियों को भ्रमा देता है,
पुण्य फल का राग ही प्राणियों को घुमा देता है।
पुण्य फल का राग ही लक्ष्य और लगाव है जिसका,
पुण्य फल का राग ही संसार सिन्धु में डुबाता है।।

जिसका लक्ष्य पावन है तो पुण्य उसका पावन होगा।
जिसका लक्ष्य अपावन है तो पुण्य उसका अपावन होगा,
पुण्य पुण्य में अंतर है एक मत समझो बन्धुओं।
जिसका लक्ष्य मोक्ष है तो पुण्य उसका साधन होगा।।

मुनि संघों के प्रति

संघ संघों में सत्य हार्दिक स्नेह चाहिये,
आपस में प्रेम पूर्ण अनोखा मेल चाहिये।
पढ़ा दीजिये ये पाठ गुरुवर हम शिष्यों को,
वात्सल्य का अब साकार सच्चा वेष चाहिये।

संघों में हम सच्चे तुम झूठे ये फूट हो गई,
संघों में परम्पराओं के नाम पर धर्म की लूट हो गई।
पता नहीं समाज पर इसका क्या परिणाम होगा,
आपसी मन भेद से ही समाज टूक टूक हो गई।।

भले ही संघों में मतभेद क्यों न हो,
भले ही संघों में कितने भी भेद क्यों न हों।
किन्तु न हो कभी मन भेद स्वप्न में,
भले ही हमें एक साथ बैठने में कुछ खेद क्यों न हो।।

शिष्यों का गुरुओं को ज्ञान नहीं है,
उनके सत्य व्यवहार का कुछ भान नहीं है।
हर संघ एक दूसरे पर कटाक्ष कर रहे,
भविष्य क्या होगा, इसका कोई ध्यान नहीं है।।

दूसरे संघों के प्रति उदार भाव चाहिये,
दूसरे संघों के प्रति प्रमोद भाव चाहिये।
कषायों के मंद होते ही जगेगी ये भावना,
दूसरे संघों के प्रति वात्सल्य भाव चाहिये।।

बड़ों द्वारा व्यवहार थोड़ा भी बहुत होता है,
बड़ों द्वारा सत्कार थोड़ा भी बहुत होता है।
बड़ों द्वारा व्यवहार ही सुधा या विष बन जाता है,
बड़ों द्वारा तिरस्कार थोड़ा भी बहुत होता है।

जब तक नहीं साध्य पर हमारी दृष्टि जाती,
तब तक ही भेद भाव पर हमारी दृष्टि जाती।
अपनों से राग दूसरों से द्वेष होता है फिर,
साध्य रुप गुणों पर नहीं हमारी दृष्टि जाती।

साधुओं में सत्य अब एकता चाहिये,
साधुओं में सत्य हार्दिक स्नेहता चाहिये।
उपगूहन व स्थितिकरण का योग चाहिये,
साधुओं में पारस्परिक उत्कर्षता चाहिये।।

कौन कैसा है मात्रा इतना ही मत देखो,
हम कैसे हैं इसे भी तुम सत्य देखो,
देखते ही मत रहो मेरे बंधुओं।
हम किसे कैसा बना सकते हैं इसे भी देखो।।

मुनियों के प्रति

मुनियों को देखते ही हृदय कमल खिल जाता है,
मुनियों के दर्शन ही रत्नत्राय के दर्शन हैं प्यारे बन्धुओं,
मुनियों को देखते ही मन प्रसन्नता से भर जाता है।।
मुनियों को देखते ही विनय से मस्तक झुक जाता है।

मुनियों का अनादर ही समाज का अनादर है,
मुनियों का अनादर ही सर्व साधुओं का अनादर है।
मुनियों का अनादर ही महापाप है बन्धुओं,
मुनियों का अनादर ही सच्चे धर्म का अनादर है।।

मुनियों की भक्ति ही धर्म की भक्ति है,
मुनियों की भक्ति ही धर्म की शक्ति है।
सच्चे हृदय से की है यदि आपने भक्ति,
तो मुनियों की भक्ति ही हमको देती मुक्ति है।।

मुनियों से ही धर्म की शोभा होती है,
मुनियों से ही धर्म की उन्नति होती है,
सींचते हैं मुनि ही समाज को हर दिन
इसलिए मुनियों से ही समाज की शोभा होती है।

मुनियों का आदर ही समाज का आदर है,
मुनियों का आदर ही धर्म का आदर है।
मुनि ही भूषण हैं प्राणी मात्रा के सुन लो,
मुनियों का आदर ही मुक्ति पथ का आदर है।।

मुनियों को पा अपना सौभाग्य समझिये,
मुनियों को पा करके प्रसन्न भाव कीजिये।
इनसे आज कीजिए धर्म मार्ग की शिक्षा,
यथा शक्ति गुरु सेवा पर ध्यान दीजिये।।

मुनियों के कष्ट को न कभी हम सुन सकेंगे,
मुनियों के कष्ट को न कभी हम गुन सकेंगे।
गुरु भक्ति से ही सत्य कह रहा हूँ मैं,
मुनियों के कष्ट को न कभी हम देख सकेंगे।।

हमारे सम्यक् भाव ही तो सच्चा द्रव्यलिंग हैं,
हमारे सम्यक् भाव ही तो सच्चा भावलिंग हैं।
हमारे भाव में ही छिपे हैं उभयलिंग, बन्धुओं
हमारे भाव ही सत्य मुक्ति पथ का लिंग हैं।।

हमारे भावों में ही द्रव्यलिंग छिपा बैठा है,
हमारे भावों में ही भावलिंग छिपा बैठा है।
जिस भाव से हम मुनियों को देखते हैं,
हमारे भावों में ही वैसा लिंग छिपा बैठा है।।

मुनियों को भाव लिंगी समझ नमस्कार कर लो,
मुनियों को भावलिंगी समझ तुम अर्चना कर लो।
भावों को शुद्ध करके तुम देखो तो उन्हें,
मुनियों के दर्शन करके अपना सौभाग्य समझ लो।।

मुनि भक्ति ही धर्म का बहुमान है,
अच्छा काम और समाज का उठता नाम है।
धर्म को गिराना और उठाना हमारे हाथ में है,
गुरु भक्ति ही हमारा सत्य मुख्य काम है।।

मुनियों को देखकर न जिनके उत्साह है,
मुनियों को देखकर न जिनके मोद भाव है।
मुनियों को देख भी जो निजकार्यों में लीन हैं,
उनके नहीं धर्म के प्रति कोई लगाव है।।

पाठशाला

विधानों में लाखों रुपये खर्च कर देते हैं,
जल बिहारों में लाखों रुपये खर्च कर देते हैं।
अंधी दौड़ समाज दौड़ती चली जा रही,
बिरले ही पाठशालाओं पर ध्यान देते हैं।।

जिनसे मंदिरों की शोभा होगी उन्हें देखो,
जिनसे मूर्तियों की पूजा होगी उन्हें देखो।
आज सब मिलके उनकी कुछ खोज कर लो,
पाठशालाओं में बालकों को पढ़ाकर देखो।।

पाठशालाओं में धर्मनीति सिखाना चाहिए,
इसे ही अपना मुख्य लक्ष्य बनाना चाहिए।
पाठशालायें तो बहुत हैं, किंतु लक्ष्य शून्य हैं वे,
लक्ष्य सिद्धि में ही कदम बढ़ाना चाहिए।।

पाठशाला है वही सच्ची जिसमें सद्‌वृत्ति की शिक्षा हो,
पाठशाला है वही सच्ची जिसमें मुनि भक्ति की शिक्षा हो।
विनय और भक्ति सिखायी जाती हो बालकों को,
पाठशाला है वह सच्ची जिसमें धर्म संस्कृति की शिक्षा हो।।

शौक

ऐसा शौक क्या काम का जो बदनाम कर दे,
ऐसा शौक क्या काम का जो बेधाम कर दे।
शौक—शौक में मत धर्म को खोओ बंधुओं,
ऐसा शौक क्या काम का जो बेकाम कर दे।।

ऐसा शौक क्या काम का जो दाग लगा दे,
ऐसा शौक क्या काम का जो आग लगा दे।
जीवन कलंकित कर दाह बढ़ावे प्राणान्त तक जो,
ऐसा शौक क्या काम का जो बाग मिटा दे।।

आज हम सिक्खों का भेष बना रहे,
ईसाई और मुस्लिम का भेष दिखा रहे।
दूसरे भेषों के धारी कुछ निज को भी देखो,
आज हम निज धर्म को छोड़ क्यों बहुभेष बना रहे।।

सिक्खों ने दूसरों पर निज छाप छोड़ दी,
मुसलमानों ने दूसरों पर भी छाप छोड़ दी।
दूसरे भेषों को अपनाने वाले कुछ तो सोचो,
तुमने उन पर अपनी क्या छाप छोड़ दी।।

शौक ने ही धर्म को बदनाम कर दिया,
शौक ने ही इन्सान को हैवान कर दिया।
शौक एक दिखावा तथा असत्य है,
शौक ने ही हमें बे लगाम कर दिया।।

क्यों नहीं सुकर्मों का जतन हो रहा,
क्यों नहीं जीवन का उन्नयन हो रहा।
सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है बंधुओं,
बुरे शौक से ही जीवन का पतन हो रहा।।

मिथ्यात्व का अंश है तभी तो विपरीत प्रवृत्ति हुई,
मिथ्यात्व का अंश है तभी तो सत्य से निर्वृत्ति हुई।
आप कहो या न कहो ये पतन का रास्ता है बुरे शौक,
निश्चित ही भविष्य खराब है, तभी तो ये वृत्ति हुई।।

शौक से मिथ्यात्व की ओर झुकाव होता है,
सत्य से उदासता और अलगाव होता है।
आज के संस्कार अंकुरित होंगे कल निश्चित,
पतित बना देना ये शौक का ही प्रभाव होता है।।

युवाओं के प्रति

आज के बालक ही कल के नौजवान हैं,
इनसे ही समाज की होती शान है।
इनको अब आगे लाओ समाज के कर्णधारों,
आज के बालक ही कल की समाज हैं।।

बालकों से गलती होना भी संभव है,
बालकों से परेशानी होना भी संभव है।
सत्य को तुम उन्हें प्रेम से समझा दो,
देर सही किंतु सत्य सुधार भी संभव है।।

युवा ही नष्ट करेंगे धर्म के प्रदूषण को,
युवा ही नष्ट करेंगे समाज के दूषण को।
उन्नति करेंगे ये अवश्य, यदि स्थान मिला तो,
सत्यनिष्ठ युवा ही बनेंगे समाज के भूषण वो।।

युवाओं को धर्म स्थान देना ही अधर्म से रोकना है,
युवाओं के चरित्रा पर ध्यान देना ही उन्हें व्यसन से रोकना है।
प्रेम से समझाकर तुम उन्हें आगे लाओ बंधुओं,
आगे लाने का अर्थ ही उन्हें पतन से रोकना है।।

युवकों को आज सच्ची राह दिखा दो,
युवकों को आप सच्ची सलाह दिला दो।
आपके हितकारी सत्य वचन वे मानेंगे अवश्य,
युवकों में आज सच्चा उत्साह जगा दो।।

युवकों को बुजुर्गों का उत्साह चाहिए,
कर्तव्य पथ पर बढ़ने की सलाह चाहिए।
निश्चित ही अच्छे युवक बेलगाम न होंगे,
उन्हें समाज के काम में आपका साथ चाहिए।।

युवकों प्रथम अपने आपको सम्हालो,
बुरे निंद्य आचरण को जड़ से निकालो।
समाज को आपकी आवश्यकता है विशेष,
पहले अपने आपको योग्य पात्रा बना लो।।

बालकों के प्रति

बालकों के हितार्थ आप धन खर्च कीजिये,
उनके चरित्रा विकास में ही अर्थ दान दीजिये।
आज के बालक ही कल की समाज बनेंगे,
इनके जीवन चरित्रा पर भी कुछ ध्यान दीजिये।।

बालकों में सद्ज्ञान का तुम दान दो,
बालकों को ज्ञान दान का तुम काम दो।
ज्ञान से ही आचरण उनका विकसित होगा,
बालकों के संस्कार पर तुम ध्यान दो।।

धर्म ज्ञान ही जीवन महान है,
धर्म ज्ञान ही जीवन का उत्थान है।
बालकों का जीवन आज आपके हाथ में,
धर्म ज्ञान ही सुखी जीवन का दान है।।

मंदिरों का निर्माण बहुत जोरों से जारी है,
मूर्तियों का निर्माण बहुत जोरों से जारी है।
चिन्ता नहीं किसी को इनके भविष्य की,
उपासकों का ह्रास बहुत जोरों से जारी है।।

बालकों पर ध्यान न दिया तो मंदिर शून्य हो जायेंगे,
बालकों पर ध्यान न दिया तो वे संस्कार शून्य हो जायेंगे।
आज बालकों को धर्म–बोध दे दो बंधुओं,
गर ध्यान न दिया तो इनके जीवन धूमिल हो जायेंगे।।

अचेतनों में लाखों तुम खर्च कर रहे हो,
अचेतन का ही निशदिन निर्माण कर रहे हो।
रक्षा व शोभा जिनसे हो सकेगी कभी,
उन बालकों पर कितना तुम ध्यान दे रहे हो।।

बालकों में धर्मज्ञान का तुम दान दे दो,
बालकों में ज्ञानदान पर तुम ध्यान दे दो।
ज्ञान से ही आचरण उनका विकसित होगा,
सच्चा उनमें यही एक वरदान दे दो।।

समाज आज देख ले आँख खोलकर,
समाज अब सुनले कान खोलकर।
बाल युवकों को यदि आगे नहीं लाये,
तो पतन देखना तुम आगे चलकर।।

जुआ

जुआ में जिसका मन चला गया,
जुआ में जिसका धन चला गया।
निर्लज्ज हो ठोकरें नित्य खायेगा वो,
जुआ में ही उसका जीवन चला गया।।

जुआ में धन जाने से कषायें जागती,
जुआ में धन आने से वासनायें जागती।
जैसा आता है धन वैसा ही चला जाता है,
जुआ में ही हर पल आपदायें नाचती।।

जुआरियों ने क्या कभी पेट भर भोजन किया,
जुआरियों ने क्या कभी नींद भर शयन किया।
दिन रात दुखी चिन्ताओं से दिखते हैं वे यहाँ,
जुआरियों ने क्या सच्चे सुख का वरण किया।।

जुआ भी एक अभिशाप है,
जुआ भी एक नागपास है।
कंगाल बना देता है ये जुआ,
जुआ भी एक महापाप है।।

अण्डा

अण्डे खाने वाले तुम तड़फते उसके जीवन को देखो,
अण्डे खाने वाले तुम विलखती उसकी माँ को देखो।
देखकर भी क्रूरता से क्या खा सकते अण्डे,
अण्डे खाने वाले तुम अपने भविष्य को देखो।।

अच्छा है रेत खा पेट को रेगिस्तान बनाना,
अच्छा है भूखे मरकर श्मशान पहुँचना।
किन्तु ध्यान रखो भूल कर जीवन में कभी भी,
अच्छा नहीं है हृदय को कब्रिस्तान बनाना।।

जो आज अण्डे को शाकाहार बता रहे,
वे माँस खिलाने का ही उपाय सिखा रहे।
इस रीति से ही खिंच आयेंगे ये शाकाहारी,
इसलिए ही वे ऐसा दुराचार का ये पाठ पढ़ा रहे।।

जो हैं माँस के स्वयं लोलुपी,
किन्तु जो हैं समाज के भय से दुःखी।
वे ही अण्डे को शाकाहार कह रहे,
अण्डे खा करके इच्छा पूरी कर रहे।।

उपसर्ग विजेता प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित प्रवचन सत् साहित्य

सं. नाम मूल्य पृष्ठ

लेखन साहित्य
(संस्कृत टीका साहित्य)

1. **सर्वोदयी संस्कृत टीका (वारसाणुवेक्खा)** 150

प.पू. आचार्य कुंदकुंद स्वामी के 2000 वर्ष प्राचीन वारसाणुवेक्खा ग्रंथ पर 'प्रथम बार' लिपिबद्ध की गई 'सर्वोदयी संस्कृत टीका' भाग-1-2। जो कि 21वीं सदी की प्रथम विशद् व्याख्यान सहित टीका है। जिसमें सभी अनुयोगों के अनेक ग्रंथों से लिये गये आगमोक्त प्रमाणों के साथ मर्मस्पर्शी, विशद् तथा सरस, सुगम व्याकरण की परिशुद्धता के साथ-साथ अनेक उद्धरण व नवीन चिंतनों को अनुपम लेखन शैली के माध्यम से आगम के अमृत को परोसा गया है। इस ग्रंथ का विषय विश्लेषण, आध्यात्मिक विकास का अमोघ सोपान है, मात्र 3 माह 18 दिन में पू. गुरुवर द्वारा रचित यह कृति अपने सरलीकरण एवं भाषा सौष्ठव के कारण न केवल जनमानस, अपितु बड़े-बड़े मूर्धन्य विद्वानों के लिये आकर्षण का केन्द्र बनेगी।

2. **रत्नत्रयवर्धिनी संस्कृत टीका – रयणसार**

आर्ष परम्परा के उद्भट आचार्यश्री कुंदकुंद महाराज द्वारा रचित 2000 वर्ष प्राचीन रयणसार जी ग्रंथ पर 'प्रथम बार' अपनी अनुपम लेखन रचनाचातुरी का प्रयोग कर 'रत्नत्रयवर्धिनी टीका' का प्रणयन कर प.पू. गणाचार्यश्री 108 विराग सागर जी महाराज ने अपने अथक परिश्रम व श्रुतभक्ति से प्रेरित होकर किया है जिसमें संस्कृत भाषा का प्रयोग सरल व स्वाभाविक ढंग से कर उसे एक उत्कर्ष प्रदान किया है, जो आगमिक प्रमाणों से समन्वित, सयुक्तिक तथा भूत तथा गूढ़ात्मक विषयों का स्पष्टीकरण सहित है। जिसे अंकलेश्वर से प्रारम्भ कर मात्र 3 माह 15 दिन की अल्प अवधि में गाँधी नगर (गुजरात) की पुण्यधरा पर पूज्य आचार्यश्री ने इसे पूर्ण किया है तथा आगम के मंथन में प्राप्त सुन्दर चिंतनों रूपी यह टीका अपने सरलीकरण व हृदयस्पर्शी चिंतनों के कारण दिग्दिगन्त में जयवंत रहेगी।

(शोधपूर्ण साहित्य)

3. **शुद्धोपयोग–** 40 147

शुद्धोपयोग विषयक भ्रान्तियों का जड़ से उन्मूलन करने वाली, लगभग 51 शास्त्रों के अन्वेषणपूर्ण गहन-मनन चिंतन तथा उनके लगभग 315 उद्धरणों से निर्मित आगमोक्त प्रमाणों से युक्त शोधपूर्ण कृति। जिस पर देश के विभिन्न प्रांतों के लगभग 150 से अधिक मूर्धन्य विद्वानों के समीक्षात्मक श्लाघनीय अभिमत प्राप्त हुए। जिसके अध्ययन से विद्वान् जगत को एक सम्यक्दिशा का बोध मिला।

4. **सम्यग्दर्शन–** 35 128

द्वितीय शोधात्मक कृति, जिसमें सम्यग्दर्शन विषयक अनेकानेक शंका-समाधानों तथा आगमिक और अध्यात्म भाषा के द्वारा सराग-वीतराग, निश्चय- व्यवहार, प्रथमोपशम-द्वितीयोपशम आदि लाक्षणिक भेद-प्रभेद, उत्पत्ति आदि गहन विषयों का लगभग 54 आगमोपदिष्ट शास्त्रों के 322 उद्धरणों से पूरित, मिथ्यात्वांधकार का विनाश कर आत्मरुचि रूप सम्यग्दर्शन को उत्पन्न करने वाली अमूल्य कृति है।

5. **आगम चक्खू साहू–** 22 135

दिगम्बर मुनियों की समाचार विधि, आर्यिका चर्या, पात्रभक्ति तथा यज्ञोपवीत संबंधी विषयों पर देश, समाज-संघ की पंथ-परम्परा के हठाग्रह से दूर, लगभग 50 ग्रंथों के सूक्ष्म अध्ययन से निकाले गए 257 उद्धरणों से परिपूर्ण संघस्थ साधु-साध्वियों की तत्त्ववार्ता रूप में एक अतिशयवान आगमोक्त शोधपूर्ण कृति।

6. **सल्लेखना से समाधि–** 30 178

आराधना, समाधि सल्लेखना विषयक लगभग 168 विषयों पर, भगवती आराधना आदि 25 शास्त्रों के खोजपूर्ण, अनेकानेक उद्धरणों से युक्त, मृत्यु महोत्सव की कला सिखाने वाली शोधपूर्ण अद्भुत कृति। जिसमें क्षपक, निर्यापकों तथा निर्यापकाचार्य की क्रियाविधि, सल्लेखना-आत्मघात नहीं आदि भ्रान्तियों का निर्सन करने वाली सुन्दर यह प्रस्तुत कृति अति प्रशंसनीय है।

7. **संत साधना के प्रेरक प्रसंग–** 20 80

साधना काल के दौर में गुजरते महत्त्वपूर्ण निज अनुभवों, प्रसंगों का लेखन। जिसमें साधक की पूर्व व पश्चात् परिणति, आत्मप्रभावना से दूर, धर्मप्रभावना ख्याति की भावना क्यों? कैसे होती है ? इन सब वास्तविक स्थितियों का अनुभव परक लेखन है।

8. **परम दिगम्बर जैन मुनि–**

(हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तमिल, अंग्रेजी) 45 192

सम्प्रति काल में दक्षिण भारत जैसे देश के अनजान लोगों के लिए दिगम्बर संतों की अचल साधना-आराधना, परिचर्या, गरिमा-महिमा तथा उनके सम्मान व निंदा के फलों के परिज्ञान हेतु लगभग 68 ग्रंथों के तथा अन्य पत्रकों के आलेखन कर अथाह कठोर प्रयास से इस शोधपूर्ण कृति का सृजन हुआ, जिसमें हिन्दु, इस्लाम, सिक्ख, बौद्ध आदि धर्मों ने भी दिगम्बर मुनियों का समय-समय पर सम्मान किया है इसका विवरण है।

9. **सर्वोदयी दिगम्बर जैनधर्म–** 30 88

यह कृति जैनधर्म का गागर में सागरवत् संक्षिप्त परिचय के साथ ग्रंथों-पुराणों-कुरानों, उपनिषदों, इतिहास के पन्नों, प्राचीन-पुरातत्व विभागों, दर्शनों तथा विदेशी विद्वानों की दृष्टि में भी शाश्वत दिगम्बर जैनधर्म का सार्वभौमिक सम्माननीय अस्तित्व को

उजागर करने वाली अलख दीपस्तंभ सदृश। पू. गुरुवर द्वारा लिखित धर्म की असीम व्याख्याओं से परिपूर्ण है।

10. **तीर्थंकर दिव्य-दर्शन-** 30 178

हमारे तीर्थंकर भगवंतों के जीवन चरित्र से परिचित/अवगत कराने वाली लगभग 200 प्रश्नों के समाधान एवं त्रेसठ शलाका पुरुषों के विषय में विस्तृत अनेक ग्रंथों के प्रमाणों से पूर्ण, जानकारी के साथ यह एक अनमोल, सारगर्भित कृति है।

11. **व्यसन विचार-** 25 102

व्यसन मुक्ति के मार्ग का दिग्दर्श कराने वाली हिन्दी, मराठी, इंग्लिश भाषाओं में रूपान्तरित सामाजिक उत्थान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कृति है जिसमें व्यसन से होने वाली हानियों तथा उनमें प्रसिद्ध व्यक्तियों की भयानक स्थितियों का चित्रण, आगम-विज्ञान तथा महापुरुषों के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

12. **फूल नहीं, है काँटें-** 50

सप्त व्यसनों का ज्ञान, त्याग से लाभ-हानि, संबंधित कथाओं का विवरण।

13. **संस्कार सुरभि (हिन्दी, गुजराती)-** 18 87

बालकों के लौकिक विकास के साथ नैतिक विकास में सहायक एक सुरभिवत् बेहतरीन कृति है जिसमें माता-पिता एवं बालकों के जीवनोपयोगी दैनिक चर्या तथा कर्तव्यों, संस्कारों का सम्यक् प्रकार से बोध कराया गया है।

14. **जिनेन्द्र दर्शन-जिनेन्द्र पूजन-** 10 58

एक श्रावकोचित् प्रभावक कृति, जिसमें सद्गृहस्थ के आवश्यक करने योग्य भगवान के दर्शन-पूजन की सागोपांग विधि का वर्णन है।

15. **आध्यात्मिक शंका-समाधान-** 30 140

शोधात्मक/खोजात्मक आयामों से परिपूर्ण, पक्षव्यामोह, दुराग्रह से दूर, आगमोक्त अध्यात्म में प्रवेश कराने वाली एक लघु कुंजीवत्, साधनोपयोगी शोधपूर्ण कृति है। जिसमें नय, निश्चयनय, व्यवहारनय आदि 12 विषयों का पूर्ण विवरण 358 प्रश्नों के समाधान रूप में लगभग 42 शास्त्रों के अन्वेषण, मनन से किया गया है।

16. **आध्यात्मिक तत्त्व-चर्चा-** 15 84

आगम और अध्यात्म के विवादग्रस्त विषयों पर तुलनात्मक अध्ययन रूप में एक वार्ता। जिसमें मुख्यतः मोक्षमार्ग विषयक 17, सम्यक्त्व विषयक 45, स्वात्मानुभूति विषयक 56-62 तथा स्वरूपाचरण विषयक 63-83, शंकाओं का समाधान काल्पनिक युक्ति से दूर, आगम प्रमाणों से किया गया है। इस कृति का उद्देश्य शिष्यों तथा साधकों को ठोस ज्ञान से परिपक्व कराना है।

(चिंतन साहित्य)

17.	**चैतन्य चिंतन**	भाग-1	15	100
		भाग-2	15	100
		भाग-3	15	104

साधकोचित् पू. गुरुवर के निज आत्मचिंतन की सरिता से उद्भूत हुए रत्नों सम चिंतवनों का लेखन।

(बालोपयोगी साहित्य)

18.	**बाल विज्ञान**	भाग-1	10	37
		भाग-2	10	56
		भाग-3	10	56
		भाग-4	10	84

धर्म परिज्ञान के प्रथम सोपान के रूप में बालकों तथा युवाओं के लिए प्रारम्भिक क्रमशः जानकारी से परिपूर्ण कृति है। जो हिन्दी, इंग्लिश, मराठी, कन्नड़, गुजराती भाषा में रूपान्तरित हो जन-जन में लोकप्रिय है।

19.	**कर्म विज्ञान**	भाग-1		40
		भाग-2		44
		भाग-3		44

हिन्दी, इंग्लिश भाषा में उपलब्ध, करणानुयोग में प्रवेश करने के इच्छुक स्वाध्याय प्रेमियों के लिए यह प्रथम पायरी है, जिसमें कर्म सिद्धांत विषयक प्रारम्भिक विषयों का सरल ढंग से लेखन किया गया है।

(कथा साहित्य)

20.	**नैतिक कथा मंजूषा**	भाग-1		85
		भाग-2		122
		भाग-3		

आगमोक्त रुचिकर कथाओं का जनमानस में परिज्ञान कराने के लिए विभिन्न शास्त्रों से संकलित कर शिक्षाप्रद-बोधपूर्ण रूप में लिखी गई कथाओं का संग्रह। जिससे समाज में नैतिकता-धार्मिकता का विकास हो सके।

(अनुवाद साहित्य)

21. **वारसाणुवेक्खा-** 144

आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी रचित वारसाणुवेक्खा ग्रंथ का सरल सुबोध अनुवाद।

22. **परमरत्नार्चना संग्रह-** 20 129

विनयपाठ से अर्घावली, विसर्जन पाठ तक सम्पूर्ण पूजाविधि का अर्थ-अनुवाद।

23. **सामायिक पाठ (हिन्दी, गुजराती)** 10 48

सम्पूर्ण आद्योपांत सामायिक विधि एवं सामायिक पाठ का अन्वयार्थ तथा भावार्थ।

(पद्य साहित्य)

24. **भावों के विशुद्ध क्षण-** 15 104

साधना काल के अमूल्य विशुद्ध, अनुभवों-क्षणों का पद्य रचना लेखन।

25. **मुक्तकांजलि - भाग-1, 2**

अनेकानेक शिक्षापूर्ण मुक्तकों के लेखन का संग्रह।

26.	**नवदेवता निर्वाण क्षेत्र पूजा–** पू. गुरुवर द्वारा रचित नवदेवता निर्वाण क्षेत्र पूजा। (संकलित/सम्पादित साहित्य)		
27.	**साधना से समाधि–** समाधि सल्लेखना के समय महत्त्वपूर्ण हिन्दी पाठ-स्तुतियों का संकलन।	20	123
28.	**विमल नित्य पाठावली–** जिनेन्द्र पूजन, 150 व्रतों की पूजन एवं विधि, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि विषयों का संक्षिप्त रूप से संकलन।	25	200
29.	**आराधना–** श्रमणों व श्रावकों द्वारा किये जाने वाले नित्योपयोगी संस्कृत के पाठों का संकलन।	35	534
30.	**सुभाषित सहस्रं–** नैतिक व धार्मिक मर्मों से परिपूर्ण सहस्र सुभाषित गाथाओं का संकलन।	40	336
31.	**आप्त अर्चना–** जिनेन्द्र पूजन - पाठ आदि का संकलन।		
32.	**मानतुंग की अमर भक्ति -** (सचित्र भक्तामर) भक्तामर स्तोत्र के काव्यों, यंत्रों-मंत्रों के सचित्र सुन्दर चित्रण।	65	100
33.	**साधना–** जनोपयोगी हिन्दी भाषा के अनेक पाठों का संकलन।	30	288
34.	**अनुप्रेक्षा–** आत्मचिन्तनोपयोगी अनित्यादि बारह भावनाओं की गाथाओं का अर्थ सहित संकलन।	10	40
35.	**जिनागम दीप–** आगम के नित्य पठनीय 25 ग्रन्थों का अर्थ सहित-सम्पादन।	251	728
36.	**सम्मेदशिखर विधान–** तीर्थराज सम्मेदशिखर जी विधान का संकलन।		
37.	**चारित्र शुद्धि व्रत–** चारित्र शुद्धि व्रत की पूजा, जाप तथा कथादि की जानकारी का संकलन।	25	140
38.	**करुणामूर्ति संत–** करुणा अवतारी प.पू. आचार्यश्री 108 विमल सागर जी महाराज की जीवनी का संकलन।		341
39.	**तपस्वी सम्राट–** तपस्वी सम्राट प.पू. आचार्यश्री 108 सन्मति सागर जी महाराज के जीवन का लेखन।		72

40. **यज्ञोपवीत विधि–**

यज्ञोपवीत संस्कार विधि की उपयोगिता, महिमा तथा ग्रहण विधि का संकलन।

41. **साधना के सोपान–**

42. **पद्म पुराण प्रश्नोत्तरी–**

पद्मपुराण ग्रंथ पर आधारित प्रश्न-उत्तररूप में ग्रंथ का सुन्दर विस्तृतिकरण। लघु समय में सम्पूर्ण ग्रंथ की जानने की उत्तमविधि।

(एकांकी/नाटक साहित्य)

434. **सत्यमित्र–सत्यदृष्टि–**

पू. गुरुवर द्वारा रचित पात्रों की मुख्यता से नाटक का लेखन।

44. **प्रद्युम्नहरण–**

'प्रद्युम्नहरण' नामक नाटक का लेखन, जिसमें पात्रों के पाठों का अलग-अलग विवरण है।

(पू. आचार्यश्री पर आधारित साहित्य)

45. **विरागाभिवंदन अभिनंदन–**

सर्वाधिक पृष्ठों वाला, विभिन्न स्तरीय साधकों, भक्तगणों आदि के पू. गुरुवर की आलौकिक व्यक्तित्व छटा पर हृदयोद्गारों की संकलित, सचित्र/राष्टीय रजत मुनि दीक्षा वर्ष की बेला में प्रकाशित वृहद् दर्पण जीवनी।'

46. **निस्पृही संत** भाग-1 60 243

भाग-2

जन्म से सम्प्रतिकाल तक के सम्पूर्ण जीवन-चरित्र का साहित्यिक सुबोध लेखन।

47. (अ) **विरागसेतु (महाकाव्य) भाग-1**

(हिन्दी, गुजराती, प्राकृत) 100 344

(ब) **विरागसेतु (महाकाव्य) भाग-1-2** (हिन्दी, प्राकृत)

प्राकृत भाषा की पद्यरचना से गुंथित पू. गुरुवर के आदर्शमयी जीवन पर महाकाव्यमयी रचना।

48. **संत काव्य की परम्परा में आचार्य विराग सागर** 65 175

पू. गुरुवर के व्यक्तित्व व कृतित्व पर डी. लिट् उपाधि से पुरस्कृत डॉ. लोकेश खरे की एक अद्भुत शोधपूर्ण कृति।

49. **कमल से महाकमल–**

अरविन्द से आचार्य विराग सागर तक की जीवन-यात्रा का लघु प्रभावक लेखन।

50. **घटनायें ये जीवन की–** 80 336

सम्पूर्ण जीवन में घटी अनेकानेक रोचक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का लेखन।

51. **दिगम्बरत्व के चितेरे–** 150

सचित्र, बालगोपाल को आकर्षित करने वाला कॉमिक्स रूप में जीवन चरित्र।

52. **विराग सिन्धु की उर्मियाँ–** 15 91

पू. गुरुवर की अनुपम जीवन पर आधारित सरस-सरल काव्यरचना।

53. **विराग वाटिका–** 41 154

पू. गुरुवर द्वारा दीक्षित शिष्य-सुमनों का सविस्तृत सचित्र परिचय।

54. **भक्ति की झंकार–** 25 158

गुरुभक्ति से पूरित धार्मिक बहुताधिक भजन-गीतों का संग्रह

प्रवचन साहित्य

(परम पूज्य गुरुवर के प्रवचन सहित)

55. **धर्म पीयूष–** 30 136

दशलक्षण पर्व में उत्तमक्षमादि दस धर्मों पर मुखरित पीयूष वाणी का संकलन।

56. **ऐसे चलो मिलेगी राह–** 40 180

दिशाविहीन जीवन को सम्यक् दिशा-बोध कराने वाले मार्मिक प्रवचनों का संकलन।

57. **दूर नहीं है मंजिल–** 30 227

निज ध्येय का बोध करा मंजिल तक पहुँचाने (मोक्ष) वाले सारगर्भित प्रवचनों का संकलन।

58. **उड़ रे पंछी–**

पू. गुरुवर के मुखारविंद से गुंजित प्रवचनों का संकलन।

59. **तीर्थंकर वर्धमान–** 15 80

भगवान महावीर स्वामी का विभिन्न दृष्टियों एवं आगम के परिप्रेक्ष्य में जीवन परिचय।

60. **पहले देव-पूजा, फिर काम दूजा–** 25 180

जिनेन्द्र प्रभु की पूजा, अर्चनाविधि के महत्त्व को उजागर करने वाले प्रवचनों का संकलन।

61. **तीर्थंकर ऐसे बनो–** 60 157

तीर्थंकर प्रकृति बंध में हेतु सोलहकारण भावनाओं का संकलित सविस्तृत प्रवचन।

62. **तट की ओर–** 54

हृदयस्पर्शी जीवन की सच्चाई का दिग्दर्श कराने वाले प्रवचनों का संकलन।

63. **सिर्फ दो प्रवचन–** 10

महत्त्वपूर्ण विशेष प्रवचनों का संकलन।

64. **इष्टोपदेश–**

अध्यात्मप्रेमियों के आध्यात्मिकता के विकास में सहायक इष्टोपदेश ग्रंथ पर संकलित प्रवचन।

65. **मानतुंग की अमरभक्ति–** 150 241

भक्तामर स्तोत्र पर भक्ति से ओत्-प्रोत्, भावभीने प्रवचनों का संकलन।

66. **कल्याणक महोत्सव–** 20 104

अनेकानेक स्थानों पर हुए गर्भादि कल्याणकों के विशेष प्रवचनों का संग्रहीकरण।

67. **दान तीर्थ–** 20 88

आहारदान की आद्योपांत महिमा, विधि, गुण, दोष, पात्र, फल आदि का वर्णन।

68. **धर्म के दश सोपान–** 20 105

मूडबिद्री में हुए दश धर्मों के प्रवचनों का सरस- संक्षिप्त संकलन।

69. **जीवों पर दया करो, शुद्ध शाकाहार करो–** 20 106

अहिंसा शाकाहार सम्मेलनों में हुए आगमिक व वैज्ञानिक तुलनात्मक प्रवचनों का संकलन।

70. **बुराईयाँ ही जेल, अच्छाईयाँ ही मुक्ति–** 10 45

विभिन्न जेलों में हुए, अपराध बोध कराने वाले मार्मिक प्रवचनों का संकलन।

71. **प्रवचन वर्षा–** 15 121

महत्त्वपूर्ण वर्षभर के जैन पर्वों पर होने वाले उपदेशामृत का संकलन।

72. **कर्तव्य मेव कर्तव्य–** 25 120

श्रावकों के षडावश्यक कर्तव्यों पर आधारित हृदय उद्‌गारों का संकलन।

73. **श्रद्धा प्रसून–** 25 128

मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ी सम्यग्दर्शन के आठ अंगों पर प्रवचनों का संकलन।

74. **मोक्ष की राह–** 125

मोक्षपथिकों को मोक्षपथ का पाथेय प्रदान करने रूप प्रवचनों का संकलन।

75. **विरागामृत–** 150

पू. गुरुवर की अमृतवाणी से मुखरित अनेक विषयों पर संकलित संक्षिप्त उद्धरण।

76. **समाधि तंत्र–**

अध्यात्मरस से परिपूर्ण समाधि ग्रंथ पर हुए सविस्तृत प्रवचनों का संकलन।

77. **समयोचित शिक्षायें** भाग-1 20 105

भाग-2 20 46

भाग-3 20 58

व्यक्तित्व विकास में कारण, समय-2 पर दी गई अमिट शिक्षाओं का संकलन।

78. **विराग मंथन–** 5 32

लघु, पर ज्ञान को विकसित करने वाले आकर्षिक उद्धरणों से पूरित कृति।

89. **रजत पुष्प–** 51 184

सद्‌गुणों के विकासादि विषयों से परिपूर्ण जनोपयोगी प्रवचनों का संकलन।

80. **कहानी सबसे सुहानी–** 30 240

पूज्य गुरुवर के प्रवचनों में से संकलित मनभावन कहानियों का संकलन।

81. **अक्षय निधि–** 10 36

हृदय पर सीधा प्रभाव करने वाले गूढ़ रहस्यात्मक प्रवचनों का संकलन।

82. **संस्कार की लहरें–** 20 85

नैतिक तथा धार्मिक सुसंस्कारों की सुरभि से सुरभित प्रवचनों का संकलन।

83. **चलो चलें प्रभुदर्शन को-** 30 88
आगमिक तथा वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर प्रभुदर्शन की आद्योपांत विधि रूप प्रवचन।

84. **आध्यात्मिक धर्म प्रवचन-** 147
दशलक्षण धर्म से संबंधित गाथाओं, कहानियों, मुक्तकों तथा उद्धरणों का विस्तृत प्रवचन संग्रह।

85. **घर-घर की कहानी-** 103
पारिवारिक एक-दूसरे सदस्यों के कर्तव्यबोध कराने वाले प्रवचनों का संकलन।

86. **वारसाणुवेक्खा प्रवचन**
वैराग्यभाव को वृद्धिंगत करने वाले अनित्यादि भावनाओं पर आधारित प्रवचनों का संकलन।

87. **पर्यूषण निधि**
आत्म रुचि को उत्तमक्षमादि भावों की ओर प्रेरित करने वाले प्रेरक प्रवचनों का संकलन।

88. **पद्मनंदी पंच विंशतिका 1 : धर्मोपदेशामृतम्-**
इस प्रवचन माला में 198 श्लोकों पर प्रवचन है जिसमें उपदेश का अधिकारी कौन, निश्चय-व्यवहार धर्म का स्वरूप, गृहस्थ-मुनि धर्म का उपदेश किसे, सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान- सम्यक्चारित्र आदि अनेक प्रकार से धर्म की महिमा की प्रकट किया गया है।

89. **पद्मनंदी पंच विंशतिका 2 : दानोपदेशम्**
दान प्रवर्तन, दान की आवश्यकता, महत्व, दान के पात्र, नवधाभक्ति, पात्र के भेद, पात्रदान, कुपात्रदान तथा अपात्रदान के फल तथा गृहस्थों को अवश्य ही दान करने की प्रेरणा देने वाले प्रभावक प्रवचनों का 54 श्लोकों द्वारा संकलन है।

90. **पद्मनंदी पंच विंशतिका 3 : अनित्यपञ्चाशत्-**
55 श्लोकों पर प्रवचनों के माध्यम से क्षणिक, नश्वर स्त्री-पुत्र, शरीर आदि की आस्थिरता को दिखलाकर उनके संयोग-विनोग में हर्ष और विषाद भावों के परित्याग की प्रेरणा प्रदान करने वाले वैराग्यमय भावों का संकलन।

91. **पद्मनंदी पंच विंशतिका 4-5 : एकत्व सप्तति: तथा यति भावनाष्टकम्-**
चतुर्थ एकत्वसप्तति अधिकार में चिदानंदस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति का उपाय, चेतन तत्व अनेक-धर्मात्मक है, द्वैत-अद्वैत बुद्धि का फल, शुद्धोपयोग साम्यभाव तथा यतिभावनाष्टक में मुनियों की कठिन चर्या, योगधारण विधि, उपसर्गों में स्थिरता आदि का सुन्दर प्रवचनों के माध्यम से प्रस्तुतिकरण संकलन है।

92. **पद्मनंदी पंच विंशतिका 6 : उपासक संस्कार:-**
सकल तथा देशव्रतों का स्वरूप, भेद, स्वामियों का निर्देश छह-आवश्यक का

स्वरूप तथा सात व्यसनों के त्याग की उपेदश तथा गृहस्थ को निरंतर मुनिपद धारण करने की प्रेरणा को देने वाले अनुपम, श्लाघनीय प्रवचनों का संकलन।

93. **पद्मनंदी पंच विंशतिका 7 : देशव्रतोद्योतनम्-**

सम्यग्दृष्टि एवं सम्यग्दर्शन की महिमा, अष्ट मूलगुण धारण करने की आज्ञा, आहारादि चार प्रकार के दान करने की प्रेरणा, देवदर्शन का महत्व, चार पुरुषार्थों में मोक्ष पुरुषार्थ करने का उपेदश तथा गृहस्थ धर्मों पर आधारित अनुकरणीय प्रवचनों का संकलन।

94. **पद्मनंदी पंच विंशति अधिकार - 8-9 सिद्धस्तुति एवं आलोचना**

सिद्ध भगवान के अनंतगुणों का वर्णन, उनकी स्तुति, गुणगान का फल, सिद्धत्व पद प्राप्ति के उपाय और जीवन में आलोचना के द्वारा पापकर्म को कैसे कम किया जा सकता है, आलोचना किससे करें, किससे न करें आदि महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित प्रवचनों का संकलन।

95. **आचार्य विरागसागर साहित्य दर्शन-**

पू. गुरुदेव से सम्बंधित सकल साहित्य का लघु परिचय, प्राप्तिस्थान, विरागवाणी, सम्पर्क सूत्र, SMS नम्बर कैसे join करें निर्देश, V.D.O. तथा O.D.O सीडी के नाम, विशेषजानकारी के लिए वेबसाईड, विरागोदय क्षेत्र संबंधी जानकारी आदि का निर्देश।

96. **मेरी भावना प्रवचन-**

पं. जुगलकिशोर मुख्तार द्वारा रचित मेरी भावना पर लोक जनकल्याण, विश्वमैत्री, भाईचारे, नैतिक-धार्मिक अनेक प्रकार की हृदय स्पर्शी मार्मिक हृदय से स्फुटित प्रवचनों का संकलन।

97. **फॉर थूथ प्रोग्रेस-**

नवीन युवा पीढी को धार्मिक क्षेत्र में अग्रसर करने, उनके प्रगति उत्थान के प्रभावक सूत्रों तथा जन-जागृति धार्मिक रुचि को प्रकट करने वाले अति प्रभावक प्रवचनों का संकलन।

98. **रत्नकरण्डक श्रावकाचार प्रवचन 1-**

श्रावकोचित महत्वपूर्ण विषयों पर श्लोकों के आधार पर मुखरित प्रवचनों का संकलन।

99. **सामायिक पाठ प्रवचन-**

सामायिक की सम्पूर्ण क्रियाविधि, समायिक कैसे कहाँ, कब आदि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर अनुगुंजित आध्यात्मिक प्रवचनों का संकलन

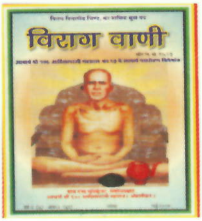

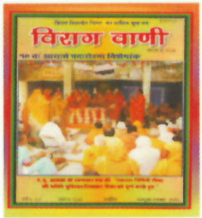

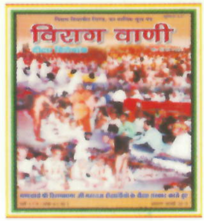

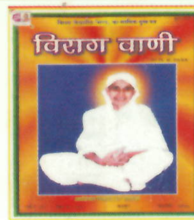

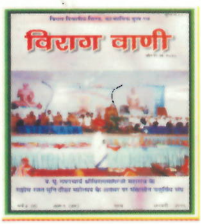

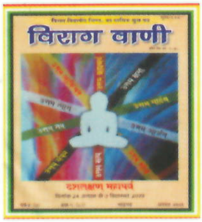

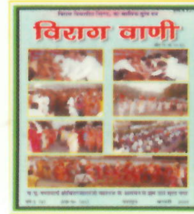

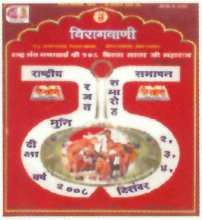

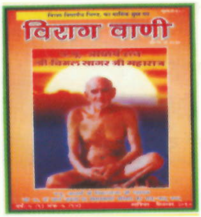

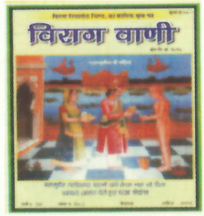

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के ससंघ से संबंधित जानकारी हेतु
वेबसाइट (Website) : www.ganacharyaviragsagarorg.

पुण्यार्जक

परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज के चरणों में शत्-शत् वंदन

स्व. श्रीमती गुलाब देवी बघावालाल

श्री महावीर कुमार एवं श्रीमती शकुन्तला देवी जैन

श्रीमती सुनिता

संजय कुमार जैन

समीर एवं साराक्षी जैन (नीमाजवाले)

प्रतिष्ठान : ओम मेडिकोज, चम्पानगर-ब्यावर, मो. 93140 44565

परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज द्वारा लिखित, संपादित, संकलित एवं प्रवचन संबंधित साहित्य यहाँ हर समय उपलब्ध हैं।

प्राप्ति स्थान :

श्री सम्यग्ज्ञान दिगंबर जैन विराग विद्यापीठ

बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)